International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(5): 128-130
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 24-09-2026
Accepted: 16-10-2026
Publish : 19-10-2026

अशोका रुइदास
शोधच्छात्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. पूनम पाण्डेय
सहायक आचार्या, संस्कृत विभाग, पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला-स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजाजीपुरम, लखनऊ

Correspondence:
अशोका रुइदास
शोधच्छात्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भारतीय ज्ञान के संवाहक पौराणिक साहित्य

अशोका रुइदास, डॉ. पूनम पाण्डेय

सारांश – पुराण भारतीय ज्ञान परम्परा का अमृतकोश है। जहाँ से भारत के प्राचीन संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकते है। प्राचीन काल से वेद, पुराण, उपनिषद ग्रन्थों में भारतीय ज्ञान परम्परा की नदी बहती आ रही है। पुराणों में हम देख सकते हैं कि प्रासाद कैसा होना चाहिये तथा पुरुष को मन्दिर निर्माण कैसे करना चाहिये इससे प्राचीन शिल्पकला का ज्ञान प्राप्त होता है। जिस घर में चित्र की प्रतिष्ठा अधिक रहती है वह घर मंगलमय हो जाते है इससे ज्ञात होता है कि पौराणिक काल में चित्रकला प्रचलित थी। प्राचीन राजाओं के राजनीति के विषय में भी वर्णन प्राप्त होता है। पुराण से अर्थनीति का ज्ञान भी प्राप्त कर सकते है। पुराण में सात द्वीप, नद-नदी, पर्वत के वर्णन से हमें प्राचीन भारत का भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। पुराण ग्रन्थों के ज्ञान परम्परा के द्वारा वर्तमान चिकित्सा पद्धति जिसमें न केवल मनुष्य अपि तु पशुओं की चिकित्सा पद्धति के विषय में बताया गया है। पुराणों से प्राचीन भारतीय इतिहास के द्वारा प्राचीन राजाओं एवं राजवंशों का ज्ञान प्राप्त करने में भी सहायता मिलती है। आयुर्विज्ञान, धर्मतत्त्व, साहित्य, दर्शन, आचार-विचार एवं व्यवहार इत्यादि विषय पुराणों में निहित है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य है पुराणों में वर्णित भारतीय ज्ञान परम्परा का अन्वेषण करना एवं इससे प्राप्त ज्ञान को वर्तमान एवं भविष्य में प्रयोग करके परवर्ती भारतीय जनों को ज्ञान परम्परा की छत्रच्छाया में रखने का प्रयास करना तथा प्रचार प्रसार में सहायता करना है।

मूलशब्द – **पौराणिक साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ।**

प्रस्तावना – पुराण से प्राचीनकाल की घटनाओं से सम्बन्धित विषय मिलता है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत माना जाता है। पुराण का अर्थ है प्राचीन। पाणिनि के अनुसार "पुरा भवम्" अर्थात् पुरा शब्द से ट्युप्रत्यय करके पुराण शब्द निष्पन्न होता है। आचार्य यास्क के मत में "पुरा नवं भवति" अर्थात् जो प्राचीन होते हुए भी नवीन है वही पुराण है। और भी है जैसे पद्मपुराण में भी कहा गया है– "पुरा परम्परां वष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्"[1] अर्थात् जो प्राचीन आर्ष परम्पराओं का व्याख्याता है उसे पुराण कहा जाता है। पुराण का दो भेद है यथा – महापुराण और उपपुराण। दोनों में ही 18 पुराण विद्यमान है। पुराण के पांच लक्षण बताया गया है - **सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।**
वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

भागवतपुराण में इन पांच लक्षणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। जैसे – जगत् की उत्पत्ति क्रम का नाम सर्ग[2] है। विश्वब्रह्माण्ड का स्वभावसे प्रलय हो जाता है, उसके चार भेद है, नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य और आत्यन्तिक। इसे प्रतिसर्ग[3] कहते है। ब्रह्मा से जितने राजाओं की सृष्टि हुई है, उनकी भूत, भविष्य और वर्तमानकालीन सन्तान परम्परा कों वंश[4] कहते है। मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि और भगवान् के अंशावतार – इन्हीं छः बातों की विशेषता से युक्त समय को मन्वन्तर[5] कहा जाता है। एवं सर्वशेष लक्षण वंशानुचरित है। ब्रह्मा सृष्ट पूर्वोक्त राजाओं के तथा उनके वंशधरों के चरित्र का नाम वंशानुचरित[6] है। ये पांच लक्षण के विषय को पुराणों में सर्वत्र वर्णन किया गया है।

पुराण भारतीय समाज का अंग बनाकर प्राचीन कथाओं, वंशावलियों, इतिहास भूगोल के तथ्य एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के सभी विषयों को काल-क्रम से समाविष्ट किये हुए है।

पुराणों में शिल्पकला, चित्रकला, धर्मतत्त्व, विश्वतत्त्व, आयुर्विज्ञान, साहित्य, दर्शन, राजनीति आदि का वर्णन किया गया है।

शिल्पकला – अग्निपुराण में जो प्रासाद तथा मन्दिर निर्माण करने का तरीका बताया गया है उससे प्राचीनकाल के शिल्पकला के बारे में हमें ज्ञान होता है। वहाँ प्रासाद निर्माण के विषय में कहा गया है

कि चौकार क्षेत्र को सोलह भाग, उसमें मध्य को चार भागों द्वारा आय सहित गर्भ निश्चित करे तथा शेष बारह भागों को दीवार उठान के लिये नियत करे। बारह भागों में से चार भाग की जितनी लंबाई है उतनी ही ऊँचाई प्रासाद की दीवारों की होनी चाहिये। विद्वान् पुरुष दीवारों की ऊँचाई से दुगुनी शिखर की ऊँचाई रखे। शिखर के चौथे भाग की ऊँचाई के अनुसार मन्दिर की परिक्रमा की ऊँचाई रखे। उसी मान के अनुसार दोनों पार्श्व भागो में निकलने का मार्ग (द्वार) बनाना चाहिये[7]।

"वैराजः पुष्पकश्चान्यः कैलासो मणिकस्तथा ।। त्रिविष्टपश्च....."[8]।

इसी पुराण में प्रासाद के पाँच भाग माना गया है। यथा – वैराज, पुष्पक, कैलास, मणिक और त्रिविष्टप। इनमें वैराज प्रासाद चतुरस्र (चौकार) होता है, दूसरा पुष्पक चतुरस्रायत है। तीसरा कैलास वृत्ताकार है। चौथा मणिक वृत्तायत है तथा पाँचवाँ त्रिविष्टिप अष्टकोणाकार है[9]। इससे हम अनुमान लगा सकते है कि पुराणों के समय में भी शिल्पकला की ज्ञान थी।

चित्रकला – विष्णुधर्मोत्तर पुराण को चित्रकला का प्राचीन स्रोत के रूप में माना जाता है। इस उपपुराण में चित्रकला[10], प्रतिमा निर्माण[11] सम्बन्धी विशद विवेचन हुआ है। इसमें शिला, दारु और लौह, स्वर्ण, ताम्र, चाँदी आदि का प्रतिमाएं बनाने का निर्देश दिया गया है[12]। पीपल, पलाश, शाल्मली, वट आदि वृक्षों की लकड़ियों का प्रयोग न करने का उपदेश भी दिया गया है[13]।

चित्र के लिए मूल रंग श्वेत, पीत, विलोम, कृष्ण और नील[14] ये सब विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र अध्याय में वर्णन किया गया है।

विश्वतत्त्व – विष्णुपुराण में भूमण्डल, भुवर्लोक, ग्रहों की स्थिति तथा उनके परिणाम आदि का यथावत् वर्णन किया गया है।

रविचन्द्रमसोर्यावन्मयूखैरवभास्यते ।
ससमुद्रसरिच्छैला तावती पृथिवी स्मृता ।।[15]

इस श्लोक के माध्यम से पृथ्वी का विस्तार वर्णन किया गया है । जितना पृथ्वी का विस्तार और परिमण्डल है उतना ही विस्तार और परिमण्डल भुवर्लोक का भी है। पृथ्वी से एक लाख योजन दूर सूर्यमण्डल है और सूर्यमण्डल से भी एक लाख योजन के अन्तर पर चन्द्रमण्डल है। चन्द्रमा से पूरे सौ हजार (एक लाख) योजन ऊपर सम्पूर्ण नक्षत्रमण्डल प्रकाशित हो रहा है। नक्षत्रमण्डल से दो लाख योजन ऊपर बुध और बुध से भी दो लाख योजन ऊपर शुक्र स्थित है। शुक्र से इतनी ही दूरी पर मंगल हैं और मंगल से भी दो लाख योजन ऊपर बृहस्पति है। बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर शनि हैं और शनि से एक लक्ष योजन के अन्तर पर सप्तर्षिमण्डल है[16]। इस तरह सात लोक[17], सात पाताल[18] तथा पूरे ब्रह्माण्ड[19] का वर्णन किया गया है।

आयुर्विज्ञान – गरुडपुराण का आयुर्वेद अध्याय में किस कारण से रोग उत्पन्न हुआ है और रोग के लक्षण क्या है जिससे रोग का निर्णय हो सके इत्यादि विषय निदान शब्द से अभिप्रेत है। यहाँ कहा गया है कि रोग के ज्ञान के पाँच[20] उपाय है – निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय और सम्प्राप्ति। इसी शास्त्र में बताया गया है ज्वर के आठ[21] भेद है।

स्त्रियों के रोगों की चिकित्सा[22] के विषय में भी बताया गया है। औषधियों के पर्यायवाची नाम जैसे स्थिरा-विदारीगन्धा शालपर्णी तथा अंशुमती एक ही औषधि के नाम है। लांगली नामक औषधि कलसी, क्रोष्ट्रापुच्छा तथा गुहा नाम से कही जाती है। शतावरी नामक औषधि वरा, भीरु, पीवरी, इन्दावरी तथा वरी के नाम से प्रसिद्ध है[23]।

राजनीति – अग्निपुराण में श्रीराम के द्वारा उपविष्ट राजनीति अध्याय से राजनीति का वर्णन मिलता है। राजा के चार प्रकार के व्यवहार[24] होता है, यथा - न्याय के द्वारा धन का अर्जन करना, अर्जित किये हुए धन को व्यापार आदि द्वारा बढाना, उसको स्वजनों और परजनों से रक्षा करना तथा उसका सत्पात्र में नियोजन करना। राजा को विनय गुण से सम्पन्न होना चाहिये, आन्वीक्षिकी (आत्मविद्या एवं तर्कविद्या), वेदत्रयी, वार्ता (कृषि, वाणिज्य और पशुपालन) तथा दण्डनीति इन चार विद्याओं के अनुसार अनुष्ठान करने वाले कर्मठ पुरुषों के साथ बैठकर चिन्तन करें जिससे लोक में इनका सम्यक् प्रचार और प्रसार हो और भी जैसे - किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, कष्ट न पहुँचाना, मधुर वचन बोलना, सत्यभाषण करना, बाहर और भीतर से पवित्र रहना एवं शौचाचार का पालन करना दीनों के प्रति दयाभाव रखना तथा क्षमा (निन्दा आदि को सह लेना) ये चारों वर्णों तथा आश्रमों के सामान्य धर्म कहे गये हैं। गुरुजनों का देवताओं के समान ही सम्मान करें तथा सुहृदों को अपने तुल्य मानकर उनका भलीभाँति सत्कार करें[25]।

धर्मतत्त्व – भागवत पुराण में भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत धर्मतत्त्व का भी आलोचन किया गया है। शास्त्र में धर्म के तीस[26] लक्षण कहे गये है, यथा – सत्य, दया, तपस्या, शौच,

तितिक्षा, उचित-अनुचित का विचार, मन का संयम, इन्द्रियों का संयम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, सरलता, संतोष, समदर्शी, महात्माओं की सेवा, धीरे-धीरे सांसारिक भोगों की चेष्टा से निवृत्ति, मनुष्य से अभिमानपूर्ण प्रयत्नों का फल उल्टा ही होता है– ऐसा विचार, मौन, आत्मचिन्तन, प्राणिणों को अन्न आदि का यथायोग्य विभाजन, उनमें और विशेष करके मनुष्यों में अपने आत्मा तथा इष्टदेवता भाव, संतो के परम आश्रय भगवान् श्रीकृष्ण नाम-गुण-लीला आदि का श्रवण, कीर्तन, स्मरण, उनकी सेवा, पूजा और नमस्कार; उनके प्रति दास्य, सख्य और आत्मसमर्पण – यह तीस प्रकार का आचरण सभी मनुष्यों का परम धर्म है। इसके पालन से सर्वात्मा भगवान् प्रसन्न होते है[27]। चारों वर्णों के भी धर्म बताए गए हैं[28]। स्त्रियों के धर्म जैसे पति की सेवा करना, पति के सम्बन्धियों के प्रसन्न रखना और सर्वदा पति के नियमों की रक्षा करना ये पति को ईश्वर मानने वाली पतिव्रता स्त्रियों का धर्म भी वर्णन किया गया है[29]।

भौगोलिक ज्ञान – पुराणों से भौगोलिक ज्ञान जैसे भारतवर्ष का वर्णन, द्वीप, नद-नदी, पर्वत सभी का वर्णन मिलता है। विष्णु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण में भारतवर्ष का स्वरूप वर्णन किया गया है। जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है वह ही भारतवर्ष है[30]। भारतवर्ष कर्मभूमि है। वहाँ इच्छानुसार साधन करने वालों को स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्त होते है। भारत के सिवाय अन्यत्र मनुष्यों के लिये कर्मभूमि नहीं है[31]। इस भारतवर्ष के नौ भेद है – इन्द्रद्वीप, कसेरुमान, ताम्रमाण, गभास्तिमान, नागद्वीप, सोम्यद्वीप, गन्धर्वद्वीप, वारुणद्वीप तथा समुद्र से घिरा हुआ यह नवाँ द्वीप भारत है[32]। जम्बु, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्राँच, शाक और पुष्कर – ये सातों द्वीप चारों ओर से खारे पानी, ईक्षुरस, मदिरा, धृत, दधि, दुग्ध और मीठे जल के सात समुद्रों से घिरे हुए हैं[33]। जम्बुद्वीप इन सबके मध्य में स्थित है और उसके भी बीचों-बीच में सुवर्णमय सुमेरुपर्वत है[34]। देवताओं में सर्वदा सेवनीय अरुणोद, महाभद्र,

असितोद और मानस – ये चार सरोवरों का भी वर्णन है[35]। नद-नदिओं के भी वर्णन है जैसे गंगा, सिन्धु, सरस्वती, शतद्रु, चन्द्रभागा, यमुना, सरयू, इरावती, वितस्ता, विपाशा, देविका, कुहु, गोमती आदि नदियाँ हिमवान् पर्वत के पाद से निकली है[36]।

इतिहास – लगभग सभी पुराणों में राजवंशों तथा राजाओं के वर्णन किया गया है। जैसे सूर्यवंश, सोमवंश एवं यदुवंशों का वर्णन अग्निपुराण में मिलता है। भगवान् विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा प्रकट हुए है। ब्रह्मा के पुत्र का नाम मरीचि है। मरीचि से कश्यप तथा कश्यप से विवस्वान (सूर्य) का जन्म हुआ है[37]। सोमवंश के वर्णन में कहा गया है कि ब्रह्मा के पुत्र अत्रि, अत्रि से सोम की उत्पत्ति हुई[38]। यदुवंश में यदु के पाँच पुत्र नीलाजिक, रघु, क्रोष्टु, शतजित् और सहस्त्रजित् का वर्णन भी है[39] । इसके अतिरिक्त पुरुवंश[40] के विषय में भी ज्ञात होता है।

दार्शनिक ज्ञान – पुराण में सर्वत्र दार्शनिक ज्ञान उपलब्ध है। भागवत पुराण में सांख्य- योग दर्शन का वर्णन किया गया है। जगत् के सृष्टि यथा प्रकृति,पुरुष आदि सभी तत्त्वों का वर्णन मिलता है[41]। भागवत पुराण में अद्वैत-वेदान्त के ब्रह्मतत्त्व[42] का भी उल्लेख है। इसके साथ मायावाद की भी चर्चा की गयी है[43]। अग्निपुराण में योगदर्शन के अष्टांगयोग[44] का विस्तार से वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष – उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पुराण भारतीय ज्ञान के संरक्षक है। पौराणिक साहित्य भारत के विश्वतत्त्व, धर्मतत्त्व, दर्शन, भूगोल, इतिहास आदि ज्ञान का भी भण्डार है। पुराण भारतीयों के लिए आचार संहिता है इसके द्वारा भारतीयों को सामाजिक बनाने का प्रयास किया गया है। इसलिए भारतीय ज्ञान परम्परा में पुराणों का ज्ञान अत्यावश्यक है और इसको ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्चशिक्षा में "भारतीय ज्ञान परम्परा" को पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा गया है।

सन्दर्भसूची

1. अग्निपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर (1923)
2. श्रीमद्भागवत महापुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. पद्मपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर (1923)
4. विष्णु पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर (1923)
5. गरुडपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर (1923)
6. ब्रह्माण्ड पुराण
7. विष्णुधर्मोत्तर पुराण में प्रतिबिम्बित समाज एवं संस्कृति, अलका तिवारी (शोधच्छात्रा), इलहाबाद विश्वविद्यालय (1993)
8. इतिहास पुराणों का परिचय, दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म. प्र.) – 485334
9. Dr (Miss) Priyabala Shah, VISNUDHARMOTTARA – PURANA, ORIENTAL INSTITUTE, BORODA, 1958
10. eGyanKosh, https://egyankosh.ac.in
11. पुराण Wikipedia, https://hi.wikipedia.org
12. Google.com

सन्दर्भ

1. पद्मपुराण 5/2/53
2. भागवत पुराण 12/7/11
3. वही..12/7/17
4. वही..12/7/16
5. वही..12/7/15
6. वही..12/7/16
7. अग्निपुराण 42/1-4
8. वही...104/11-12
9. वही...104/12-13
10. विष्णुधर्मोत्तर पुराण 3/35
11. वही...3/38
12. वही...3/43/31-32
13. वही..(3/89/7)मार्गवृक्षान्महाराज प्रयत्नेन विवर्जयेत् । पलाशं कोविदारं च शाल्मलिं पिप्पलं वटम् ।।
14 विष्णुधर्मोत्तर पुराण 3/40/16
15 विष्णुपुराण 2/7/3
16 वही...2/7/4-9
17 वही..2/7/12-18
18 वही...2/5/2
19 वही..2/7/21
20 गरुड पुराण 146/3
21 वही..(147/32) ज्वरोऽष्टधा दृष्टः ।
22. गरुड पुराण 172/1-43
23 वही..202/2-4
24 अग्निपुराण 238/2
25 वही....238/3,8,10,11
26 भागवत पुराण 7/11/8-12
27. भागवत पुराण 7/11/12
28 वही...7/11/14-15
29 वही...7/11/25
30 ब्रह्माण्ड पुराण,भारतदेश,श्लोक-5
31 वही....श्लोक – 7
32 विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 3/6-7
33 विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 2/5-6
34 वही....2/7
35 वही....2/26
36 ब्रह्माण्ड पुराण, भारतदेश 25/28
37 हरेर्ब्रह्मा पद्मागोभून् मरीचिर्ब्रह्मणः.....अग्नि पुराण,273/1-2
38 विष्णुनाभ्यब्जजोब्रह्मा ब्रह्मपुत्रोऽत्रिरत्रितः.....वही 274/1-2
39 वही...275/1-2
40 पुरोजर्नमेजयोऽभूत् तत्सुतः.....वही 278/1-6
41 भागवत पुराण, 3/26/10-14
42 वही....वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम् । /ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ।। (1/2/11)
43 वही....2/9/33
44 अग्निपुराण, अध्याय 372-376